जीवन का रहस्य

धर्म की यात्रा रहस्य को हल करने की यात्रा नहीं है। रहस्य को जीने की यात्रा है। हल करे ना-समझ। जीवन का क्षण मिला है एक महोत्सव में, निमंत्रण मिला है, धर्म उसमें सम्मिलित हो जाना चाहता है। धर्म नाचना चाहता है

एक बाउल फकीर हुआ, जिसकी कथा मुझे बड़ी प्रीतिकर रही है। कोई उससे पूछता है परमात्मा के संबंध में, तो बाउल फकीर इकतारा लिये रहते हैं। किसी ने पूछा है। जिसने पूछा है, वह पंडित है, बड़ा बुद्धिमान है, शास्त्रों का ज्ञाता है। लेकिन बाउल फकीर उसे कुछ जवाब नहीं देता, अपना इकतारा छेड़ देता है। वह थोड़ी देर तो सुनता है; फिर कहता है, 'बंद करो। मैं कुछ पूछने आया हूं, इकतारा सुनने नहीं। बहुत इकतारे सुन लिये।' तो बाउल फकीर खड़ा हो जाता है। नाचना शुरू कर देता है। पंडित के लिए यह बिलकल बेबूझ है। वह कहता है, 'क्या तुम पागल हो?' बाउल फकीर का मतलब ही पागल फकीर होता है। बाउल फकीर का मतलब होता है : बावला। 'क्या तुम बिलकुल पागल हो? मैं पूछता हूं परमात्मा की—मैं पूछता हूं पश्चिम की, तुम चलते हो पूरब। यह नाचने से क्या होगा?'

तो उस फकीर ने एक गीत गाया, और उसने कहा कि तुम्हारे बातों से मुझे याद आती है : "एक बार ऐसा हुआ कि एक सुनार फूलों की बगिया में पहुंच गया। भूल से ही पहुंचा होगा, क्योंकि सुनार धातु के साथ जीता है। मुर्दा सौन्दर्य में उसका रस है—सोना, चांदी, हीरे-जवाहरात! जिन्दा सौंदर्य में उसका कोई रस नहीं, जहां फूल खिलते हैं; क्योंकि फूल सुबह खिलते हैं, सांझ मुरझा जाते हैं, सोना सदा सम्हालकर रखा जा सकता है। हीरा हजारों साल तक सम्हाला जा सकता है। मुर्दा सौन्दर्य में उसका रस था। लेकिन एक बार भूल-चूक से बगिया में पहुंच गया। माली ने उसे अपने फूल दिखाये। जैसा कि मैं नाचा, जैसे कि मैंने इकतारा बजाया—मैंने तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर दिये हैं। माली ने उसे फूलों के संबंध में समझाया, लेकिन उसने कहा कि नहीं, मैं कोई ऐसे माननेवाला नहीं हूं। मैं सुनार हूं, पारखी हूं। उसने अपने खीसे से सोना कसने का पत्थर निकाला और फूलों को कस-कसकर देखने लगा। सोने के कसने के पत्थर पर फूल नहीं कसे जाते। और अगर फूल इसमें गलत साबित हुए, कसौटी में न कसे गए, तो फूलों का कसूर नहीं है, कसौटी का कसूर है। उसने फूलों को कसा, पटक दिया, और कहा कि इनमें कोई भी न तो सोना है, न कोई चांदी है।"

संत की वाणी अगर बेबूझ लगती है तो कसूर संत का नहीं है; तुम जिस मन से उसे कस रहे हो, उस मन का है। जीवन रहस्य है। संत क्या करे? उसकी वाणी में रहस्य प्रगट है। उसकी वाणी वैसी ही है जैसा जीवन का रहस्य है।

उसकी वाणी में समाधान नहीं है; उसकी वाणी में समाधि का स्वर है। समाधान का अर्थ है कि तुमने तर्क से समझा-बुझाकर कोई हल खोज लिया। संत ने कोई समाधान नहीं खोजा है; संत ने समाधि खोज ली। उसने रहस्य के साथ जीने का ढंग खोज लिया। अब वह रहस्य को हल नहीं करना चाहता; वह रहस्य को जीता है। पहेली को हल नहीं करना चाहता, क्योंकि वह समझ गया है कि पहेली में ही सौंदर्य है; उसे हल करने में तो सब मर जायेगा। वह किसी पहेली को हल नहीं करना चाहता—न प्रेम की, न प्रार्थना की, न परमात्मा की। उसने तो एक तरकीब खोज ली कि अब वह नाचता है इस पहेली के साथ; इस रहस्य के साथ वह खुद भी रहस्यपूर्ण हो गया। उसने तारों जैसा सौंदर्य उपलब्ध कर दिया। उसने ओस-कणों जैसी, शबनम जैसी ताजगी उपलब्ध कर ली। उसने फूलों जैसी सुवास पा ली। वह पक्षियों जैसा उड़ने लगा है अनंत के आकाश में। उसने रहस्य में तैरना और तिरना सीख लिया। अब वह रहस्य को हल नहीं करना चाहता।

रहस्य को हल करने की जरूरत भी नहीं है। रहस्य को हल करने वाले मनुष्यता के शत्रु हैं। क्योंकि वे हर चीज को हल कर देते हैं। तुम जाओ एक मनस्विद के पास, पूछो कि प्रेम क्या है—वह हल कर देगा। वह बता देगा कि यह क्या है। 'यह प्रकृति की चेष्टा है—संतति को पैदा करने की।' वैज्ञानिक के पास जाओ, शरीरविद् के पास जाओ तो वह कहेगा, "यह कुछ भी नहीं है, हारमोन्स् हैं। शरीर में स्त्री-पुरुष के हारमोन्स हैं, उन्हीं का सब खेल है। तुम झंझट में मत पड़ना।" तुम जाओ केमिस्ट के पास। वह बतायेगा, वह कहेगा, "शरीर में ऐसे-ऐसे रस पैदा होने के कारण प्रेम की भ्रांति पैदा होती है। प्रेम वगैरह कुछ है नहीं।"

ये सभी लोग हल करने बैठे हैं। ये सब हल कर दिये हैं। उनके हल के कारण जीवन से सब रहस्य खो गया है। अब सोच लो, कि जब तुम अपनी प्रेयसी को गले लगाओ, तब तुम्हें पता है कि 'हारमोन काम कर रहे हैं, और तुम नाहक मेहनत कर रहे हो। हारमोन तुम्हें चला रहे हैं। एक इंजेक्शन हारमोन का और तुम्हारे सब यह प्रेम वगैरह बदल जायेगा।'

विवाह करने जाओ और तुम्हें पता है 'कुछ है नहीं। ये बैन्ड-बाजे सब धोखा है। असल में जीवशास्त्र कहता है, प्रकृति अपने को पैदा करती रहना चाहती है; वह तुम्हें उपकरण की तरह उपयोग कर रही है। तुम तो मर जाओगे, तुम्हारे बच्चों को; तुम्हारे बच्चे मर जायेंगे, उनके बच्चों को...। प्रकृति जीवन को बचाये रखना चाहती है, तुमसे उसका कोई प्रयोजन नहीं है। तुम तो एक वाहन हो जीवन के। बैन्ड-बाजे बेकार बजा रहे हो। जीवन तुम पर चढ़ा है। प्रकृति तुम्हारे सिर पर बैठी है; वह तुम्हें चला रही है।'

अगर तुम प्रार्थना के लिए पूछने जाओ तो भी चल

समाधान विज्ञान की खोज है, समाधि धर्म की। दोनों शब्द एक ही धातु से, एक ही मूल शब्द से बने हैं, लेकिन बड़े दूर निकल गये हैं। विज्ञान कहता है, समाधान क्या है समस्या का; धर्म कहता है, समाधि

वैज्ञानिक के पास उत्तर हैं। अगर तुम ध्यान के लिए पूछने जाओ, तो अब वैज्ञानिकों ने यंत्र खोज लिये हैं ध्यान के भी। खोपड़ी में इलेक्ट्रोड लगाकर वे जांचकर बता देते हैं कि ध्यान हो रहा है कि नहीं हो रहा है। क्योंकि वे कहते हैं कि यह सब तो विद्युत तरंगों का खेल है। अल्फा तरंग अगर चल रही हो तो ध्यान है।

वैज्ञानिक हर चीज को हल करने लगा है। तुम थोड़ा सोचो, किसी दिन अगर वैज्ञानिक सफल हो गया, उसने सब हल कर दिया, फिर आत्मघात के अतिरिक्त और क्या बच रहेगा? लेकिन वह आत्मघात भी न करने देगा। वह कहेगा, इसको भी हम हल किये देते हैं कि इसका कारण क्या है।

धर्म की यात्रा रहस्य को हल करने की यात्रा नहीं है। रहस्य को जीने की यात्रा है। हल करे ना-समझ। जीवन का क्षण मिला है एक महोत्सव में, निमंत्रण मिला है, धर्म उसमें सम्मिलित हो जाना चाहता है। धर्म नाचना चाहता है चांद-तारों के साथ।

कबीर कहते हैं, कुछ कहा नहीं जा सकता उस परमात्म के संबंध में, जो तुम्हारे प्रश्नों को हल कर दे। 'है जैसा तैसा रहे।' रहस्य है और रहस्य ही रहेगा, और तुम व्यर्थ हल करने में समय मत गंवाओ; तुम डुबकी लगाओ, तुम डूबो इस रहस्य में, नहाओ, नाच लो। अस्तित्व का यह क्षण उत्सव बना लो। उस उत्सव से तुम परमात्मा से और रहस्य से एक हो जाओगे। वही एक हो जाना समाधि है।

समाधान विज्ञान की खोज है, समाधि धर्म की। दोनों शब्द एक ही धातु से, एक ही मूल शब्द से बने हैं, लेकिन बड़े दूर निकल गये हैं। विज्ञान कहता है, समाधान क्या है समस्या का; धर्म कहता है, समाधि। तुम समाधान खोजो ही मत। समाधान खोजा ही न जा सकेगा। रहस्य रहस्य ही रहेगा। तुम कितना ही जानते जाओ, और रहस्य के नये परदे उठते जायेंगे। और वही हुआ है। रोज रहस्य के नये परदे उठते गये हैं; रहस्य चुका नहीं है। विज्ञान ने बहुत जान लिया और कुछ भी नहीं जाना।

अभी वैज्ञानिकों की एक बहुत बड़ी परिषद केनेडा में बैठी और उस परिषद ने जो प्रस्ताव पास किये, उनमें एक प्रस्ताव बड़ा अनूठा है, जो कि वैज्ञानिकों से कभी भी आशा नहीं है। वह पहला प्रस्ताव है परिषद का, और पहली दफा वैज्ञानिकों ने समझदारी की थोड़ी-सी झलक दी है। पहला प्रस्ताव यह है कि लोग सोचते हैं कि हम बहुत जानते हैं; लेकिन हम जानते हैं कि हम कुछ भी नहीं जानते। यह बड़ी समझदारी की बात है। विज्ञान अगर किसी दिन इतना समझदार हो गया तो विज्ञान समर्पण कर देगा धर्म की यात्रा में अपना भी।

— ओशो

सुनो भई साधो, बीसवां प्रवचन

(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)